एस.जी.सी.ए.आर.एस.-समाचार पत्र

इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय

शहीद गुण्डाधूर कृषि महाविद्यालय एवं अनुसंधान केन्द्र कुम्हरावण्ड-जगदलपुर जिला-बस्तर (छ.ग.) 494001

संरक्षकः डॉ.एस.के.पाटील,कुलपति

संपादकः डॉ.डी.एस.ठाकुर

सह संपादकः श्री मनीष कुमार

प्रधान संपादकः डॉ एस.सी. मुखर्जी,अधिष्ठाता

संपादक मण्डलः डॉ.ए.प्रधान, डॉ.अविनाश गुप्ता

डॉ.देव शंकर राम, डॉ.एस.अग्रवाल एवं डॉ.जी.शर्मा

अंक - 01 | अक्टूबर - दिसंबर 2013 | त्रैमासिक समाचार पत्र | वर्ष - 01

कुलपति

संदेश

भारत में विगत् 66 वर्षो में कृषि के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य हुआ है। वर्ष 2000 में छ.ग. की स्थापना के साथ राज्य में कृषि विश्वविद्यालय ने तीनों जलवायु क्षेत्रों में कृषि शिक्षण, अनुसंधान एवं प्रसार के क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य किया। किसी भी राज्य का कुशल मानव संसाधन एक बहुमूल्य धरोहर होती है। इस सन्दर्भ में शहीद गुण्डाधूर कृषि महाविद्यालय एवं अनुसंधान केन्द्र, जगदलपुर, द्वारा बस्तर जैसे शैक्षणिक रूप से पिछड़े इलाके में शिक्षण अनुसंधान एवं प्रसार के क्षेत्र में अभूतपूर्व उपस्थिति दर्ज की गई है। सूचना एवं ज्ञान क्रांति के युग में अपने कार्यो को ज्यादा से ज्यादा लोगों तक पहुँचाने में यह समाचार पत्र एक अतिउत्कृष्ट भूमिका अदा करेगी। मैं इसके सफल प्रकाशन हेतु अधिष्ठाता, वैज्ञानिकों एवं कर्मचारियों को शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ।

(एस. के. पाटील)

निदेशक अनुसंधान

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है, शहीद गुण्डाधूर कृषि महाविद्यालय एवं अनुसंधान केन्द्र, जगदलपुर अपना त्रैमासिक समाचार पत्र प्रकाशित करने जा रहा है। बस्तर संभाग में फसल विविधिकरण एवं अनुसंधान की व्यापक संभावनाए है। अनुसंधान एवं अपनी अन्य गतिविधियों को ज्यादा से ज्यादा लोगो तक पहुँचाने में यह समाचार पत्र एक महत्वपूर्ण संचार माध्यम का कार्य करेगा। इस प्रयास हेतु केन्द्र में कार्यरत अधिष्ठाता एवं समस्त वैज्ञानिक बधाई के पात्र है। इस त्रैमासिक समाचार पत्र के उज्ज्वल भविष्य हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित है।

(एस. एस. शॉ)

निदेशक विस्तार

संदेश

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई कि शहीद गुण्डाधूर कृषि महाविद्यालय एवं अनुसंधान केन्द्र, जगदलपुर द्वारा त्रैमासिक समाचार पत्र प्रकाशित किया जा रहा है। बस्तर के विकास का एकमात्र साधन सम्पूर्ण ग्रामीण विकास ही है। इसके बिना न तो सम्यक रूप से बस्तर संभाग की अर्थव्यवस्था सुधर सकती है और न ही बहुसंख्यक आबादी की तरक्की हो सकती है, लेकिन अनुसंधान की नवीनतम जानकारी आम लोग तक सरल भाषा में पहुँचाना एक जिम्मेदारी का काम हैं। अत: मातृ भाषा में सरल रूप से अपनी गतिविधियों को ज्यादा से ज्यादा लोंगों के बीच में पहुँचाने में यह समाचार पत्र एक अहम भूमिका अदा करेगा। इस उत्कृष्ट कार्य के लिए अधिष्ठाता एवं वैज्ञानिको को मेरी शुभकामनाएँ।

(जे.एस.उरकुरकर)

अधिष्ठाता कृषि संकाय

संदेश

किसी भी संस्थान में शैक्षणिक एवं अनुसंधान की गतिविधियाँ निरन्तर सम्पादित होती रहती है, इनमें से महत्वपूर्ण सूचनाओं का आदान-प्रदान अत्यन्त आवश्यक कार्य है। इस सोच को फलीभूत करने की एक अनुपम पहल शहीद गुण्डाधुर कृषि महाविद्यालय एवं अनुसंधान केन्द्र, जगदलपुर, एक त्रैमासिक पत्रिका के रूप में प्रकाशित करने जा रहा है। जो इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय के अन्य महाविद्यालयों के लिए एक उत्प्रेरक का काम करेगा। अत: मैं अधिष्ठाता एवं सभी वैज्ञानिको को हृदय से धन्यवाद देता हूँ।

(ओ.पी.कश्यप)

अधिष्ठाता छात्र कल्याण

संदेश

छ.ग. का बस्तर अंचल आर्थिक, सामाजिक एवं शिक्षा के क्षेत्र में पिछड़ा माना जाता है। बस्तर अंचल के कृषकों की जीवन शैली कृषि व वनोपज पर निर्भर है। अत: बस्तर का एकलौता शासकीय कृषि महाविद्यालय एवं अनुसंधान केन्द्र संभाग के कृषकों को कृषि संबंधी नवीन तकनीकी जानकारी देने तथा कृषि शिक्षा प्रदान करने के क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रहा है। संस्था द्वारा प्रकाशित समाचार पत्र के माध्यम से अनेक नवीन सूचनाएँ एवं जानकारियाँ दूरस्थ ग्रामीण अंचलों तक अपनी उपस्थिति दर्ज करेगी। इस कार्य हेतु प्रकाशन मण्डल को मेरी बधाई प्रेषित है।

(डी.एस.सरनाईक)

अधिष्ठाता की कलम से

बस्तर जिला 1981 के पूर्व रायपुर संभाग का हिस्सा हुआ करता था। बस्तर जिले को संभाग का दर्जा 16 फरवरी 1981 को दिया गया। जिसमें 8 तहसील एवं 32 विकास खण्ड सम्मिलित किये गए। तत्कालीन मध्य प्रदेश राज्य के सबसे बड़े संभाग में कोई भी कृषि अनुसंधान केन्द्र नही था। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली ने जवाहर लाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय जबलपुर मध्यप्रदेश के अन्तर्गत चल रही राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान परियोजना (नार्प) प्रारंभ करने हेतु मूल्यांकन के लिए सन् 1978 में डॉ ए. अप्पा राव, निदेशक अनुसंधान, आन्ध्रप्रदेश कृषि विश्वविद्यालय, हैदराबाद की अध्यक्षता में समिति का गठन किया गया। समिति ने 23 फरवरी 1979 को जगदलपुर, दन्तेवाड़ा, पखाँजूर (दण्डकारण्य परियोजना) का भ्रमण कर क्षेत्र में कृषि अनुसंधान की आवश्यकताओं पर विचार विमर्श किया एवं बस्तर में राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान परियोजना के क्रियान्वयन की अनुशंसा की। परिक्षेत्रीय कृषि अनुसंधान केन्द्र बस्तर में इस परियोजना का शुभारंभ 1 दिसंबर 1979 को हुआ था।

क्षेत्र की आवश्यकताओं को देखते हुए भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली ,द्वारा गठित समिति की अनुशंसा पर राज्य शासन के कुम्हरावण्ड बीजोत्पादन प्रक्षेत्र, जगदलपुर को जवाहर लाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, जबलपुर को कृषि अनुसंधान केन्द्र के रूप में 07 अगस्त 1980 को स्थानान्तरित किया गया। अनुसंधान केन्द्र की विधिवत स्थापना 21 मार्च 1981 को माननीय श्री अर्जुन सिंह जी तत्कालीन मुख्यमंत्री, मध्यप्रदेश शासन के कर कमलो द्वारा हुआ एवं इसका नाम क्षेत्रीय कृषि अनुसंधान केन्द्र रखा गया। इसी तारतम्य में क्षेत्र की अनुसंधान आवश्यकताओं को देखते हुए भारत सरकार की सातवीं पंचवर्षीय योजना में 3 अखिल भारतीय समन्वित परियोजनाएँ इस केन्द्र के लिए स्वीकृत की गई। वर्तमान में 8 अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजनाएँ इस केन्द्र में संचालित है। अनुसंधान केन्द्र को प्रोन्नत करते हुए 20 सितंबर सन् 2001 को शहीद गुण्डाधूर कृषि महाविद्यालय एवं अनुसंधान केन्द्र की स्थापना की गई।

आज के बदलते परिवेश में इस केन्द्र के द्वारा हर क्षेत्र में नई क्रान्ति का संचार किया जा रहा है। फसल उत्पादन की हम बात करें तो विकास की दौड़ में मानो इसका स्वरूप ही बदल गया हैं। स्वन्त्रता प्राप्ति के समय देश का वार्षिक खाद्यान्न उत्पादन मात्र 50 मिलियन टन था जो वर्तमान में 260 मिलियन टन के करीब पहुँच गया है। बस्तर संभाग का जनसमूह आदिकाल से जैविक खेती ही करता आया जो कि टिकाऊ खेती का एक महत्वपूर्ण अंग हैं। मिट्टी, जल और वायु प्राकृतिक संसाधन है जिनका क्षरण पर्यावरण के लिए खतरनाक साबित हो सकता है। विशेष कर औद्योगिकीकरण तथा अनियंत्रित जनसंख्या के कारण जैव विविधता काफी तेजी से नष्ट हो रही है। वर्तमान में बस्तर का ग्रामीण जनजीवन समस्याओं की एक लंबी श्रृंखला से गुजर रहा है। इसका समाधान उत्तम कृषि तकनीक अपना कर ही संभव है।

हम राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के महान शब्दों में विश्वास करते है, हमारे पास आने वाला किसान हमारे लिए सबसे महत्वपूर्ण है। वह हम पर निर्भर नही है बल्कि हम उस पर निर्भर है। किसान हमारे कार्य का मुख्य लक्ष्य है। वह हमारे व्यवसाय से बाहर नही अपितु उसका एक हिस्सा है। यदि हम उनके काम आते हैं तो वह हमारा आभारी नही अपितु हम उनके आभारी है। इस अनुसंधान केन्द्र तथा महाविद्यालय में नई – नई खोजों, शिक्षण तथा विभिन्न गतिविधियाँ संचालित हो रही है, गतिविधियों को इस पत्र द्वारा एकत्रित कर आप पाठकों तक प्रस्तुत कर रहें है। मै आशा करता हूँ कि पाठक इस संस्करण के साथ आने वाले समय में केन्द्र में संचालित विभिन्न शैक्षणिक, अनुसंधान एवं प्रसार गतिविधियों से ज्यादा से ज्यादा जनसमूह लाभ प्राप्त करते रहेगे।

आप के लिए नव वर्ष मंगलमय हो...

(एस. सी. मुखर्जी)

केन्द्र में संचालित विभिन्न अनुसंधान परियोजनाए

क्रं.	परियोजना का नाम(अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना)	परियोजना की शुरूआत	वर्तमान में पदस्थ वैज्ञानिक	महत्वपूर्ण उपलब्धि
1.	ताड़ (नारियल)	1987 - 88	डॉ एस अग्रवाल	छत्तीसगढ़ में नारियल की पहली किस्म इंदिरा नारियल–1 की औसत उपज 85. 4 फल /वृक्ष/वर्ष पाया गया जो कि स्थानिय किस्मों से 40.90 प्रतिशत अधिक है एवं सूखे के प्रति प्रतिरोधक है।
2.	कन्द अनुसंधान (आलू को छोड़कर)	1987 - 88	डॉ. देव शंकर	इंदिरा टोपियोका–1 एवं टोपियोका–4 को अखिल भारतीय कंदमूल परियोजना 10वीं एवं 11वीं समूह बैठक में अनुसंशित किया गया।
3.	धान सुधार परियोजना	1992 - 93	डॉ. ए. के. गुप्ता श्री एम. कुमार श्री आर आर भंवर श्री प्रफुल्ल कुमार	शस्य विज्ञान, पादप प्रजनन, कीट एवं रोग विज्ञान के तहत अनुसंधान कार्य संचालित है ।
4.	काजू सुधार परियोजना	1993 - 94	श्री एम. एस. पैकरा	छत्तीसगढ़ में काजू की पहली किस्म इंदिरा काजू–1 रिलीज किया गया जिसकी अधिकतम उपज 15.53 कि ग्रा./वृक्ष, नट वजन 10 .5 ग्राम तथा कोल्ड एवं टी. एम.बी. कीट के प्रतिरोधक पाया गया । यह किस्म राष्ट्रीय किस्म वैगुरला–4, से उत्तम है।
5.	सरसों एव तोरिया सुधार परियोजना	1996 - 97	श्री आर.एस.नेताम श्री जे. एल. सलाम	महाविद्यालय की विकसित किस्म इंदिरा तोरिया–1 जिसकी औसत उपज 780 कि.ग्रा./हे. एवं तेल 40 6 प्रतिशत है जो कि राष्ट्रीय चेक से अधिक है। छ.ग.सरसो देर से बोने के लिए उपयुक्त है
6.	लघुधान्य फसल सुधार परियोजना	2000 - 01	डॉ. ए. के. प्रधान डॉ. ए. साव श्री डी. पी. पटेल	इस परियोजना द्वारा छ.ग. की प्रथम रागी की किस्म इंदिरा रागी –1 तथा कोदो की इंदिरा कोदो –1 अनुसंशित की गई।
7.	बरानी खेती परियोजना	2005–06	डॉ. डी. एस. ठाकुर श्री ए. के. ठाकुर डॉ. गिरजेश शर्मा	वर्षा आधारित कृषि तक नीकी एवं प्राकृतिक संसाधनों के समुचित प्रबंधन द्वारा उच्चहन, मध्यम एवं निचली भु मीयों के लिए कृषि प्रौद्योगिकी विकसित की गई जिससे क्रमशः 1.5, 2.0 एवं 2.5 लाख प्रति हेक्ट. तक की आमदनी प्राप्त होती है।
8.	एग्रो एडवाईजरी सर्विस (कृषि सलाह सेंवायें)	1999	श्री एम. कुमार	मौसम संबन्धित जानकारियों का संग्रह तथा मौसम पुर्वानुमान से संबन्धित विभिन्न विभागों तथा कृषकों को एग्रोएडवाईजरी बुलेटिन प्रति सप्ताह जारी की जाती है।

आदिवासी उप परियोजना एवं पिछड़ा क्षेत्र अनुसंधान कोष

क्रं.	परियोजना का नाम	वर्ष	मुख्य/सह अंवेषक
1.	काजू प्रसंस्करण व मूल्य संर्वधन	2013	(1) PI - श्री एम. एस. पैकरा (2)Co-Pls डॉ. देव शंकर, श्री एस. के. नाग एवं श्री डी. पी. सिंह
2.	तीखुर प्रसंस्करण व मूल्य संर्वधन	2013	(1) PI - डॉ. देव शंकर (2)Co-Pls श्री एस. के. नाग, श्री एम. एस. पैकरा, डॉ. एस. अग्रवाल श्री डी. पी. सिंह, श्री. जी. पी. नाग एवं श्री एन. के बोकाडे

विज्ञान एवं प्रौद्योगिक विभाग द्वारा स्वीकृत परियोजनाएँ

क्रं.		वर्ष	मुख्य अंवेषक
1.	बस्तर में रोपणी फसलों द्वारा कार्बन अवशोषण क्षमता का मूल्यांकन	2013	डॉ. आदिकांत प्रधान
2.	छत्तीसगढ़ के बस्तर क्षेत्र में खरपतवार का संर्वेक्षण व उनका फसलों पर प्रभाव का आंकलन	2013	डॉ. आदिकांत प्रधान
3.	बस्तर क्षेत्र में वर्षा जल संगहण एवं संरक्षण के उपायों का लोगो तक संचरण	2013	डॉ. आदिकांत प्रधान

संस्था के गतिविधियों की झलक

माननीय कुलपति डॉ. एस. के. पाटील, निदेशक अनुसंधान डॉ. एस. एस. शॉ, निदेशक विस्तार डॉ जे. एस. उरकुरकर, एवं विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों के अध्यक्ष द्वारा दिनॉक 7 एवं 8 अक्टूबर को आंचलिक अनुसंधान एवं प्रसार गतिविधियों कि समीक्षा बैठक एवं प्रक्षेत्र भ्रमण के दरमियान केन्द्र में संचालित अनुंसधान एवं प्रसार गतिविधियों का अवलोकन कर वैज्ञानिकों को आवश्यक दिशा निर्देश विश्वविद्यालय के वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा दिया गया।

दिनॉक 30 एवं 31 अक्टूबर को चावल अनुसंधान निदेशालय के निदेशक डॉ. बी. सी. विरक्तमठ्, पौध एवं पादप प्रजनन के विभागाध्यक्ष डॉ. ए. के. सरावगी एवं प्रमुख वैज्ञानिक डॉ. दीपक शर्मा द्वारा केन्द्र एवं कृषक प्रक्षेत्र में संचालित विभिन्न अनुसंधान परियोजनाओं एवं कृषको से उनकी कृषि के क्षेत्र में आवश्यकताओं से संबन्धित विषयों पर विस्तृत चर्चा एवं अवलोकन करते हुए।

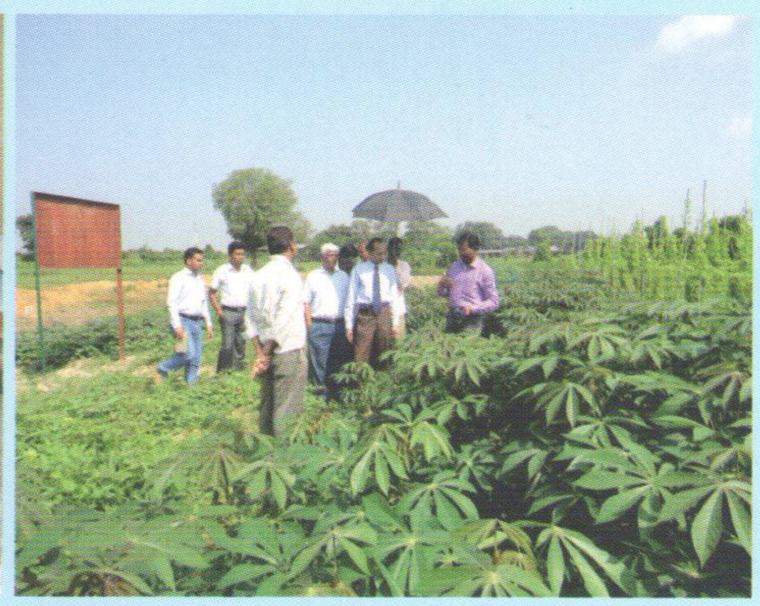

केन्द्र में संचालित रबी पूर्व,विगत् वर्ष एवं प्रस्तावित अनुसंधान कार्यो की समीक्षा दिनॉक 4 अक्टूबर 2013 अधिष्ठाता की अध्यक्षता में सभागार कक्ष में किया गया।

दिनॉक 2-12-2013 को पौध किस्म और कृषक अधिकार संरक्षण पर एक दिवसीय जागरूकता कार्यक्रम के तहत अंकित आनंद (IAS) जिलाधीश बस्तर एवं डॉ. आर. आर. हंचीनाल एवं विश्वविद्यालय के अधिकारी।

दिनॉक 12 अक्टूबर को स्वामी विवेकानन्द तकनीकी विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. बी. सी. मल ने केन्द्र में संचालित गतिविधियों का अवलोकन तथा प्रक्षेत्र भ्रमण किया।

स्वास्थ्य एवं पोषण सुरक्षा हेतु अंतराष्ट्रीय मिलेट प्रमोशन संगोष्ठी, ज्वार अनुसंधान निदेशालय, हैदराबाद (दिनांक 18 से 20 दिसम्बर 2013) के अनुसंधान पेपर प्रस्तुति में प्रथम पुरस्कार प्राप्त करते हुए केन्द्र के वैज्ञानिक डॉ. आदिकान्त प्रधान एवं डॉ. अभिनव साव।

23 दिसम्बर 2013 को आयोजित औषधीय, मसाले, सुगन्धित एवं अकाष्ठीय वनोपज से संबन्धित राष्ट्रीय संगोष्ठी के अवसर पर महामहिम राज्यपाल श्री शेखरदत्त, कुलपति एवं वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा प्रदर्शनी का अवलोकन ।

ग्रामीण कृषि कार्य अनुभव (रावे) के तहत ग्राम टहकापाल मे चतुर्थ वर्ष के विद्यार्थियों द्वारा कृषको के खेतों में विभिन्न प्रकार के उन्नत कृषि तकनीकी का प्रदर्शन किया।

अधिष्ठाताओं का कार्यकाल

डॉ. एस. एस. शॉ
28 अगस्त 2001 से 5 अक्टूबर 2001

डॉ यू. के कौशिक
6 अक्टूबर 2001 से 31 जुलाई 2004

डॉ.के.एल.नन्देहा
1 अगस्त 2004 से 20 जनवरी 2005

डॉ.एस.के.पाटील
21 फरवरी 2005 से 30 मार्च 2010

डॉ. एस. एस. राव
31 मार्च 2010 से 18 सितम्बर 2012

डॉ. एस. सी. मुखर्जी
18 सितम्बर 2012 से अब तक

प्रेषक: अधिष्ठाता श.गु.कृ.महा.एवं अनु.केन्द्र
कुम्हरावण्ड,जगदलपुर-बस्तर (छ.ग.)494001 फोन 07782-229360

प्रति,